डेंगू रोधी मच्छर डेंगू से बचाएंगे

शोधकर्ताओं ने ऐसे मच्छर तैयार किए हैं जो डेंगू का वायरस नहीं फैलाते। अगले साल इन्हें ऑस्ट्रेलिया और वियतनाम में छोड़ने की तैयारी चल रही है। ये डेंगू से बचाने में मदद करेंगे।

डेंगू गर्म देशों की एक घातक बीमारी है। यह वायरस जनित रोग गर्म देशों में हर साल करीब 10 करोड़ लोगों को पीड़ित करता है और लगभग 40 हज़ार लोग मौत के शिकार हो जाते हैं। विशेषज्ञों के मुताबिक रोग का भौगोलिक दायरा फैलता जा रहा है।

क्वींसलैण्ड विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया के स्कॉट ओनील तथा उनके साथियों ने पाया कि फलों पर मंडरानी वाली मक्खी में एक बैक्टीरिया पाया जाता है जो *एडीस* मच्छरों को संक्रमित कर सकता है। फल-मक्खी के इस बैक्टीरिया का नाम *वोल्बाचिया* है। *वोल्बाचिया* से संक्रमित *एडीस* मच्छरों में डेंगू वायरस को वहन करने की क्षमता बहुत कम हो जाती है। *वोल्बाचिया* संक्रमित मच्छरों का जीवन काल भी आधा रह जाता है। यह एक महत्त्वपूर्ण बात है क्योंकि डेंगू वायरस को फैलाने का काम मूलतः वयस्क मच्छर करते हैं। अर्थात *वोल्बाचिया* संक्रमित मच्छरों में वायरस कम होंगे और ऐसे मच्छर जिएंगे भी कम।

एडीस मच्छरों में *वोल्बाचिया* बैक्टीरिया अगली पीढ़ी को संक्रमित मादा मच्छरों के अंडे के ज़रिए मिलते हैं। यानी सिर्फ छोड़े गए मच्छरों की संतानों में ये बैक्टीरिया होंगे। मगर ओनील का मत है कि जल्दी ही *वोल्बाचिया* संक्रमित मच्छरों का अनुपात बढ़ जाएगा। इसका कारण यह है कि संक्रमित मादाएं अन्य संक्रमित नर मच्छरों के साथ भी संतानोत्पत्ति कर सकती हैं और सामान्य मच्छरों के साथ भी जबकि सामान्य मादा मच्छर सिर्फ असंक्रमित नर के साथ संतानें पैदा कर सकती हैं।

इसका मतलब यह होगा कि कुछ ही सालों में ज़्यादा मच्छर वे होंगे जो *वोल्बाचिया* संक्रमित होने की वजह से डेंगू नहीं फैला पाएंगे। इन मच्छरों को अगले साल ऑस्ट्रेलिया और वियतनाम में छोड़ने की योजना है। ***(स्रोत फीचर्स)***